आड़ की तो बात ही और है...

हमारे जीवन की राह को सुगम बनाने के लिए जब तब आड़ की जरूरत पड़ती रहती है। जो जितनी सुरक्षित आड़ पा लेता है वह अपने को उतना ही धन्य मानता है । मुझे भी आड़ का महत्व उस दिन समझ आ गया था ,जब मैं बचपन की आनंददायी जीवन में जी रहा था ।

एक दिन किसी बात पर पिताजी गुस्सा होकर छड़ी लेकर पिटाई करने लगे । ऐसे में मां ने आव देखा न ताव, खाना बनाते किचन से दौड़कर मुझे आड़ में कर लिया । पल भर में पिताजी का नदी के बाढ़ की तरह आया गुस्सा ठंडा हो गया। तभी से मैंने जीवन में आड़ को बहुत उपयोगी समझा।

जंगल में शिकारी हिंसक पशुओं का शिकार आमने सामने न कर पेड़ की आड़ लेकर करता है । आड़ ही उसके प्राणों की रक्षा करती है । कभी कोई अधिकारी मिस्टर एक्स की गलती पर डांटने का मन बनाता है तो ऐसे में कभी उसका प्रिय साथी वाई, आड़ बनकर मिस्टर एक्स को बचा लेता है।

किसी सरकारी अस्पताल में जब बड़े अधिकारी वहां दी जारी सुविधाओं और व्यवस्था को चेक करने आते हैं और जब अस्पताल की कमियां देखते हैं तो संबंधित चिकित्सालय प्रभारी ऐसा है वैसा है की आड़ लेकर ही जैसे तैसे आई बला को टालता है। सेना के जवान भी यथासंभव आतंकवादियों को निशाना बनाने के लिए आड़ की सुविधा प्राप्त कर कार्रवाई करते हैं। राजनीति में भी आड़ बहुत उपयोगी बनी रहती है। लोकसभा चुनाव में संविधान खतरे में है की आड़ को लेकर, विपक्ष ने बहुत कुछ उपलब्धि प्राप्त कर ली थी। किसी ऑफिस का बाबू किसी भ्रष्ट अधिकारी की आड़ लेकर खुद भी मौज उड़ाता है और बहती गंगा में हाथ धो लेता है।

एक कहावत है नाच न जाने आंगन टेढ़ा । जब कोई नृत्य करने वाली अपना सही नृत्य नहीं दिखा पाती तो वह इसी सुरक्षित कहावत की आड़ का बहाना बनाकर अपनी प्रतिष्ठा बचाये रखती रखती है। हमारे सामाजिक जीवन में कई अवसर ऐसे आते हैं कि हमें आड़ की बाड़ लगानी पड़ती है। कभी पड़ोसियों से अनबन, लड़ाई झगड़ा होने की संभावना के चलते किसी बहाने की आड़ लेकर गुस्से को ठंडे बस्ते के हवाले करना होता है। किसानों के लंबे चले आंदोलन की आड़ में कई नेता अपनी मन मर्जी का वक्तव्य देते रहे। और उनके प्रिय बनते रहे।

आड़ का खेल सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच भी चलता रहता है। दक्षिण में हिंदी भाषा को लेकर विरोध जताया जा रहा है। कुछ नेताओं का सोच है कि,हिंदी विरोध की आड़ में अपने अप्रिय कार्यों को ढकने की कोशिश हो रही है । जब कोई प्रतिनिधि अपने वादे के अनुसार काम नहीं कर पाता तो वह पर्याप्त बजट न मिलने की आड़ का बहाना लेकर लोगों के विरोध से मुक्ति पा लेता है।

जिसे देखो वह जब तब आड़ के छाते को अपनी सुरक्षा के लिए अपने ऊपर तान लेता है और अपनी मस्ती में बना रहता है।

दिनेश विजयवर्गीय
215 मार्ग 4 रजत कॉलोनी, बूंदी 323001 राजस्थान
मोबाइल 94131 28514

विपिन वानखेड़े के लिए जीतू का दाव

शहर कांग्रेस अध्यक्ष के लिए उठापटक

इंदौर (नगर संवाददाता)। भाजपा के अध्यक्ष का फैसला होने के बाद शहर कांग्रेस अध्यक्ष के लिए भी उठापटक शुरू हो गई है और तीन नाम प्रमुखता से सामने आए हैं, जिसमें पूर्व विधायक विपिन वानखेड़े पर दाव लगाने की बाते होने लगी है।

शहर कांग्रेस कार्यालय पर कैलाश विजयवर्गीय के स्वागत के बाद से ही सुरजीतसिंह चड्ढा पर तलवार लटकी हुई है। वैसे भी चड्ढा दो अध्यक्षों की लड़ाई के बाद तीसरे के रूप में जंग जीतकर ले गए थे और अभी तक उनका कार्यकाल चल रहा है। विधानसभा चुनाव में हार के बाद से ही यह माना जा रहा था कि अध्यक्ष बदल सकता है, लेकिन प्रदेश कांग्रेस की कमान जीतू पटवारी के हाथ में आ गई है।

पटवारी ने पूरे प्रदेश का दौरा कर लिया है और अपने नेताओं को मैदान मे उतारना शुरू कर दिया है। इसके लिए हर तरह की सियासत की जा रही है, ताकि कोई झंझट न हो सके। इंदौर में भी कांग्रेस की हालत सबसे ज्यादा खराब है। वजह यही है कि एक भी विधायक उनका नहीं है। इंदौर से ताल्लुकात रखने वाले नेताओं पर भी अब पटवारी ने नजरे गढ़ाना शुरू कर दी है। चूंकि पुरानी उलझन में मामला दिल्ली तक पहुंचा दिया था। अरविंद बाग़ड़ी को अध्यक्ष बनाए जाने के बाद कहानी बिगड़ गई थी। इसी के चक्कर में नए अध्यक्ष को लेकर बातचीत होने लगी है। सबसे पहला नाम आगर के पूर्व विधायक विपिन वानखेड़े का है, वो पटवारी की पहली पसंद है और उन्हीं के चेहेते नेता है।

पटवारी के कारण वानखेड़े को विधानसभा का टिकट मिला था। दिल्ली से पटवारी ने ही उनको टिकट दिलवाया था, लेकिन बाद में वह चुनाव हार गए। वानखेड़े इंदौर के ही रहने वाले है और एनएसयूईआई के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। पटवारी का झुकाव उनकी तरफ है, लेकिन दूसरे गुट के नेता इसमे अड़ंगे अड़ा रहे हैं। दूसरा नाम अमन बजाज का है, उनके लिए भी कोशिशें की जा रही है। पूर्व विधायक सत्यनारायण पटेल के साथ दूसरे नेताओं के करीबी होने का फायदा भी अमन को मिल सकता है। युवा लाबी के चक्कर में अमन ने भी अपना दावा इंदौर और भोपाल मे रखा है। जिस तरीके से जीतू पटवारी के राहुल गांधी के साथ रिश्ते अच्छे हैं, वहीं सततू पटेल के रिश्ते भी प्रियंका गांधी के साथ अच्छे हैं और इनकी वजह से ही यूपी चुनाव के प्रभारी भी बने थे। सत्तू पटेल की भी दिल्ली में पक़ड़ मजबूत है, क्योकि ज्योतिरादित्य सिंधिया से जुड़े होने के कारण फिर भी कांग्रेस नहीं छोड़ी।

अमन बजाज को लेकर भी बाते होने लगी है। तीसरा नाम अरविंद बागड़ी का है, वो भी लम्बे समय से जोर आजमाइश कर रहे हैं। उनके लिए भी उठापटक होने लगी है और पटवारी के लिए बागड़ी का दाव भी मजबूत हो सकता है। उन्होंने विपिन का नाम आगे बढाया है, लेकिन बागड़ी से भी उनके रिश्ते बेहतर हे और इसी कारण अरविंद बागड़ी के लिए भी कोशिश चल रही है। अंतिम समय मे निर्णय बदल भी सकता है और नया नाम भी आ सकता है, लेकिन जिस तरीके से सियासत चल रही है, उससे तो यही लग रहा है कि कभी भी अध्यक्ष के नाम पर फैसला हो सकता है।

तेज तर्रार नेता की तलाश

अभी तक शहर कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में कोई ऐसा नेता सामने नहीं आया है, जो अफसरो से भिड़ सके और उनके मुकाबला भी करें। मैनेजमेंट की राजनीति के कारण भी कांग्रेस को नुकसान उठाना पड़ सकता है।

बताते हैं कि तीन नम्बर के पूर्व विधायक अश्विन जोशी का नाम भी दौड़ मे आया था, क्योंकि अभी कांग्रेस विपक्ष मे हैं और इंदौर में मुकाबला करने वाला नेता कोई नही है। अश्विन ने ही कैलाश विजयवर्गीय और महापौर पर जवाबी हमला किया था, जिससे सियासत और गंभीर हो गई थी। बताते हैं कि अश्विन जोशी ने अगर रजामंदी की तो उन्हें भी कमान सौंपी जा सकती है।

हालांकि कद उनके हिसाब का नहीं है, लेकिन कांग्रेस को आगे बढ़ाने के लिए उनसे भी दाव खेला जा सकता है। इतना ही नहीं जोशी के आगे कई नेता और अफसर अभी भी नतमस्तक है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी इस नाम पर सहमत नहीं होंगे।

ग्वालियर संसदीय क्षेत्र से सिंधिया ने बनाई दूरी

कुशवाह और ज्योतिरादित्य के बीच तकरार से भाजपा की चुनौती बढ़ी

इंदौर। मप्र में भाजपा ने लोकसभा की सभी 29 सीटें जीत कर प्रदेशभर में एक समान विकास की राह पर कदम बढ़ाया है। लेकिन ग्वालियर में भाजपा नेताओं के बीच तकरार के कारण विकास प्रभावित हो रहा है। दरअसल, गुना सांसद व केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और ग्वालियर सांसद भारत सिंह कुशवाह के बीच तकरार इस कदर बढ़ गई है कि सिंधिया ने ग्वालियर से लगभग मुंह ही मोड़ लिया है।

गतदिनों राजमाता विजयाराजे कन्या महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव समारोह में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की मौजूदगी में ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर के ग्वालियर के विकास के लिए सीमाएं लांघने का आग्रह के अलग-अलग राजनीतिक मायने निकाले जा रहे हैं। माना जा रहा है कि अब इस आंतरिक टकराव में सिंधिया खेमे से ऊर्जा मंत्री ने मोर्चा संभाल लिया है। हालांकि इस आग्रह के बाद तोमर ने चुप्पी साध ली है।

जामवाल ने लिया फीडबैक

केंद्रीय मंत्री सिंधिया और सांसद भारत सिंह कुशवाह के बीच शुरू हुई तकरार वरिष्ठ नेतृत्व तक पहुंच गई है। इसी सिलसिले में भाजपा के क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जामवाल ने गतदिनों ग्वालियर नगर प्रवास के दौरान जिले वरिष्ठ नेताओं से भी इस संबंध में जानकारी ली है और वरिष्ठ नेतृत्व इस मसले पर अब गंभीर नजर आ रहा है।

दरअसल, सांसद भारत सिंह कुशवाह के उनके संसदीय क्षेत्र दखलंदाजी पर पार्टी में आतंरिक रूप से आपत्ति दर्ज कराने के बाद से सिंधिया जिले के सामाजिक कार्यों में सहभागिता कर रहे हैं, लेकिन विकास कार्यो से दूरी बना ली है। इससे पहले एलिवेटड रोड सहित संसदीय क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों पर अधिकारियों की बैठक लेकर अपडेट लेने के साथ आवश्यक दिशा-निर्देश भी देते थे।

सामने आई थी अनबन

जीवाजी विश्वविद्यालय के कार्यक्रम से केंद्रीय मंत्री और सांसद के बीच अनबन सामने आई थी। जीवाजी विश्वविद्यालय प्रांगण में उप-राष्ट्रपति महाराजा जीवाजी राव सिंधिया के प्रतिमा अनावरण समारोह से सिंधिया और सांसद के बीच चल रही अनबन सामने आई थी। इस कार्यक्रम में सांसद को आमंत्रित नहीं किया गया था। कुशवाह ने अन्य शासकीय कार्यक्रमों में सहभागिता की थी। इसी आंतरिक द्वंद के कारण ग्वालियर व्यापार मेला का न उद्घाटन हो पाया और न ही समापन हुआ। इस टकराव जिले के अधिकारी अजीबो-गरीब द्वंद फंसे हुए हैं।

सिंधिया से कांग्रेस से आग्रह विकास के लिए आगे आए

कांग्रेस नेता राजकुमार शर्मा ने सिंधिया को पत्र लिखकर आग्रह किया है कि विकास कार्यों से दूरी से अंचल का विकास अवरूद्ध होगा और आपकी खामोशी से क्षेत्र को नुकसान होगा।

भाजपा ने मांगी मतदान केंद्रों पर मोबाइल फोन ले जाने की छूट

इंदौर। भारत निर्वाचन आयोग ने चुनाव प्रक्रिया में सुधार के लिए सभी राज्यों में स्थानीय राजनीतिक दलों से फीडबैक लेना शुरू किया है। इसी कड़ी में मध्य प्रदेश में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों की बैठक आयोजित की। इस बैठक में भाजपा और कांग्रेस ने अपने-अपने सुझाव आयोग के समक्ष रखे। भाजपा ने चुनाव प्रक्रिया में कुछ बदलाव की आवश्यकता जताई। भाजपा ने कहा कि मतदान केंद्रों पर मोबाइल फोन लाने की अनुमति दी जाए, क्योंकि युवाओं के आधार, पैन कार्ड, मतदाता पहचान पत्र जैसे महत्वपूर्ण दस्तावेज अक्सर उनके डीजी लॉकर में होते हैं। इससे उन्हें अपने दस्तावेजों के लिए बार-बार कार्यालयों में जाने की आवश्यकता नहीं होगी। वहीं, कांग्रेस ने ईवीएम पर संदेह व्यक्त करते हुए सुझाव दिया कि चुनाव बैलेट पेपर के माध्यम से कराया जाए। कांग्रेस ने यह भी कहा कि चुनावी प्रक्रिया में पारदर्शिता बनाए रखने के लिए कुछ अन्य सुधारों की जरूरत है। कांग्रेस के अनुसार, वीवीपेड मशीन से निकली पर्ची की समय सीमा 7 सेकंड से बढ़ाकर 10 सेकंड की जाए। मतदान के दौरान ईवीएम मशीन के मॉक पोल को दिन में कम से कम 2 से 3 बार किया जाए। इसके अलावा, मतदाता का नाम बाहर जाने पर पंचनामा बनाकर उसका सत्यापन किया जाए। कांग्रेस ने डुप्लीकेट मतदाताओं के नाम सर्च करने का प्रोग्राम निरंतर चलाने का भी सुझाव दिया। इसके साथ ही, रंगीन फोटोयुक्त मतदाता सूची को राजनीतिक दलों को उपलब्ध कराए जाने की मांग की। कांग्रेस ने यह भी कहा कि मतदाता का थंब इंप्रेशन लेकर ही उसे मतदान की अनुमति दी जाए और आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायतों के निराकरण के लिए प्रभावी सेल गठित किया जाए। भाजपा ने भी कुछ अन्य सुझाव दिए। भाजपा ने कहा कि चुनाव घोषित होने के बाद पोस्टरों और बैनरों को हटाने के लिए स्पष्ट गाइडलाइन तैयार की जानी चाहिए। इसके अलावा, चुनावी खर्च के संदर्भ में मतदान और मतगणना में लगे एजेंट के खर्च को प्रत्याशी के चुनावी खर्च से बाहर किया जाना चाहिए। भाजपा ने यह भी प्रस्तावित किया कि मकानों की संख्या की राष्ट्रीय स्तर पर नीति बनाई जाए। साथ ही, कर्मचारियों के मतदान को पोस्टल बैलेट के बजाय ईवीएम से कराया जाए।

सिपाही सौरभ शर्मा की 92 करोड़ की संपत्ति अटैच

डायरी की जांच को लेकर जांच अधिकारी मौन

इंदौर। केंद्रीय परिवर्तन निदेशालय ईडी ने परिवहन विभाग के पूर्व आरक्षक सौरभ शर्मा की 92 करोड रुपए की संपत्ति को अटैच कर लिया है। सौरभ शर्मा देश का पहला ऐसा सिपाही है। जिसकी कार में 52 किलो सोना मिला था ईडी के अधिकारियों ने 52 किलो सोने तथा 11 करोड़ की नगदी के साथ अन्य संपत्ति जप्त की है, जो 92 करोड रुपए की है।

सौरभ शर्मा और उसके रिश्तेदारों के नाम पर जो संपत्ति जांच अधिकारियों को मिली थी। उसे ईड़ी द्वारा अटैच कर लिया गया है।अब इसकी कोई खरीद बिक्री नहीं हो सकेगी। सौरभ शर्मा के जिन परिवार जनों की संपत्ति जप्त की गई है।उनमें सौरभ शर्मा,अविरल कंस्ट्रक्शन कंपनी, मां उमा देवी शर्मा, पत्नी दिव्या शर्मा,सास रेखा तिवारी तथा सहयोगी शरद जायसवाल की संपत्तियों को ईड़ी ने जप्त किया है।

उल्लेखनीय सौरभ शर्मा और उसके रिश्तेदारों के यहां लोकायुक्त, आयकर विभाग और ईडी के अधिकारियों ने जांच की थी। जिसमें यह संपत्ति पाई गई है। छापे के दौरान जो डायरियां मिली थी। उसमें बड़े-बड़े अधिकारियों और राजनेताओं के नाम हैं। उसके मामले में जांच एजेंसियों ने अभी चुप्पी साध रखी है।

कार्टून कोना..........

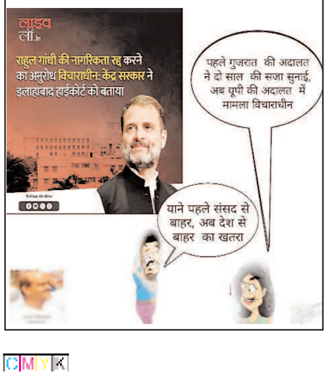

राहुल की क्लास में पढ़ाया जाएगा संगठन का पाठ

जिला व शहर कांग्रेस अध्यक्षों की दिल्ली में होगी 3 अप्रैल को बैठक

इंदौर। मप्र के कांग्रेस के सभी शहर और जिला अध्यक्षों की दिल्ली में एक बड़ी बैठक होने जा रही है, जिसमें सभी जिला और शहर कांग्रेस अध्यक्षों को बुलाया गया है। यह बैठक राहुल गांधी द्वारा बुलाई गई है, जिसमें नेताओं को संगठन का पाठ पढ़ाया जाएगा। इस बैठक में पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे भी शामिल होंगे। बैठक के दौरान दोनों नेता सभी अध्यक्षों से वन-टू-वन चर्चा करेंगे। मप्र कांग्रेस कमेटी कार्यालय से सभी शहर और जिला अध्यक्ष के नाम पर एक पत्र जारी हुआ है। यह पत्र प्रदेश कांग्रेस के कार्यालय मंत्री ने जारी किया है।

पत्र में कहा गया है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा मप्र के कांग्रेस के सभी शहर और जिला अध्यक्षों के साथ संगठनात्मक मुद्दों पर चर्चा का आयोजन किया गया है। यह चर्चा 3 अप्रैल को दिल्ली में इंदिरा भवन कोटला मार्ग पर होगी। इस चर्चा में सभी शहर और जिला अध्यक्ष को पहुंचना है। पत्र में सभी अध्यक्षों से कहा गया है कि 3 अप्रैल को दिल्ली में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करते हुए 25 मार्च तक प्रदेश कांग्रेस कमेटी को इसका कंफर्मेशन दे दे। सूत्रों ने बताया कि दिल्ली बुलाए गए सभी अध्यक्ष से खडगे और राहुल गांधी द्वारा वन-बाय-वन चर्चा की जाएगी। मप्र में कांग्रेस विधायकों द्वारा दल-बदलकर कांग्रेस सरकार को गिरा दिए जाने के बाद से कांग्रेस इस स्थिति को बनने से रोकने के तरीके ढूंढने में लगी हुई है।

इस मामले में गंभीर विचार-विमर्श करने के बाद कांग्रेस इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि हमें संगठन को मजबूत करना होगा। इसी निष्कर्ष के परिणामस्वरूप अब सभी शहर और जिला अध्यक्ष को बुलाया जा रहा है और उनसे संगठन को मजबूत बनाने के लिए चर्चा कर योजना तैयार की जाएगी।

चौधरी और पटवारी एक साथ जाएंगे विंध्य के दौरे पर

विंध्य कभी कांग्रेस का गढ़ हुआ करता था, लेकिन आज पार्टी यहां हाशिए पर आ गई है। विधानसभा से लेकर लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को यहां बुरी तरह हार का सामना करना पड़ा है। प्रदेश की सत्ता में वापसी के लिए विंध्य का मजबूत होना जरूरी है। इसे देखते हुए कांग्रेस ने अपने पुराने गढ़ को मजबूत करने के लिए कवायद शुरू कर दी है। इसकी शुरुआत प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी और पीसीसी चीफ जीतू पटवारी के तीन दिवसीय दौरे से हो रही है। प्रदेश प्रभारी व पीसीसी चीफ यहां कार्यकर्ताओं से रूबरू होंगे और उनसे कांग्रेस को मजबूत करने के लिए चर्चा करेंगे।

प्रदेश कांग्रेस के महामंत्री संगठन प्रभारी डॉ. संजय कामले ने बताया कि मप्र कांग्रेस के प्रभारी विधायक हरीश चौधरी, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी और अभा कांग्रेस के सचिव सहप्रभारी रणविजय सिंह 26 से 28 मार्च तक सतना, रीवा और सिंगरौली जिले के संयुक्त प्रवास पर रहेंगे। नेताद्वय 26 मार्च को दोपहर 12 बजे सतना पहुंचेंगे, जहां वे कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन में शामिल होंगे। नेताद्वय उसी दिन दोपहर 2 बजे चित्रकूट, रामपुर बघेला, नागौद, रैगांव, मैहर जिले की मैहर एवं अमरपाटन विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेसजनों से विधानसभा वार संगठनात्मक चर्चा करेंगे।

चौधरी, पटवारी और सिंह 27 मार्च को सुबह 9 बजे सतना से प्रस्थान कर सुबह 10 बजे रीवा पहुंचेंगे, जहां कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करेंगे।

दोपहर 1 बजे रीवा, गुढ़, त्योंथर, मनगवां, सिरमौर, सिमरिया एवं मऊगंज जिले की मऊगंज एवं देवतालाब विधानसभा क्षेत्र के विधानसभा वार कार्यकर्ताओं वन टू वन करेंगे। 28 मार्च को तीनों नेता 11 बजे सिंगरौली पहुंचेंगे, जहां वे सिंगरौली जिले में कंपनियों द्वारा भूस्वामियों, विस्थापितों एवं युवा बेरोजगारों के साथ किये जा रहे अन्याय के विरूद्ध कांग्रेस पार्टी द्वारा आयोजित जन आक्रोश आंदोलन को संबोधित करेंगे। नेतात्रय उसी दिन दोपहर 2 बजे सिंगरौली में सिंगरौली, देवसर, धौहनी विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस कार्यकर्ताओं से विधानसभा वार व्यक्तिगत चर्चा करेंगे।

अभी होना है फेरबदल

एक तरफ दिल्ली में सभी जिला और शहर कांग्रेस अध्यक्षों की बैठक बुलाई गई है तो दूसरी तरफ भोपाल में शहर और जिला कांग्रेस अध्यक्ष बदलने की तैयारी की जा रही है। मप्र के नए प्रभारी बनाए गए हरीश चौधरी द्वारा संगठन में जिला अध्यक्ष से लेकर ब्लॉक अध्यक्ष तक परिवर्तन करने की पहल की गई है। इस पहल के परिणाम स्वरूप प्रदेश में अधिकांश जिला एवं शहरी इकाई के अध्यक्ष बदलने की तैयारी की जा रही है।

बजट से पहले पार्षदों की लगेगी क्लास

इन्दौर। निगम मुख्यालय स्थित अटल बिहारी वाजपेयी परिषद सभागृह में आयोजित बजट सम्मेलन में आगामी 3 अप्रैल को नगर निगम का वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए बजट पेश होगा।

बताया जा रहा है कि इसके पूर्व महापौर पुष्यमित्र भार्गव द्वारा एक कार्यशाला का आयोजन संभावित है जिसमें शहर के सभी वार्ड पार्षदों को एक साल में उनके वार्ड में हुए विकास कार्यों की रिपोर्ट के साथ बुलाया जाएगा। और रिपोर्ट लेकर आगामी बजट से जुड़ी जानकारी उन्हे दी जाएगी। वहीं विगत एक वर्ष में सभी पार्षदों के वार्डों में हुए विकास कार्यों की जानकारी का भी अवलोकन किया जाएगा।